खंजन नयन के बहाने सूरदास

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगांव
ता. चाकुर जि. लातूर। (महाराष्ट्र)

हिंदी भाषा की विविध विधाओं पर लेखन कर हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मेधावी व्यक्तित्व अमृत लाल जी नागर का जन्म 17 अगस्त 1960 ई को उत्तर प्रदेश में आगरा जिले के गोकुलपुरा गांव में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ और मृत्यु 23 फरवरी 1990 ईस्वी में हुई।

अमृतलाल नागर जी के पिता का नाम राजाराम नागर था। आपके पितामह पंडित शिवराम नागर 1895 में ही लखनऊ आकर बस गए थे। अमृतलाल की पढ़ाई हाईस्कूल तक ही हुई थी। उन्होंने स्वाध्याय द्वारा ही साहित्य,पुराण, पुरातत्व और समाजशास्त्र का अध्ययन किया। हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगला और अंग्रेजी भाषा पर उनका जबरदस्त अधिकार था। आपने पहले नौकरी की, फिल्म लेखन किया और उसके पश्चात निरंतर स्वतंत्र लेखन के जरिए हिंदी साहित्य की सेवा की।

नागर जी ने आरंभ में मेघराज इंद्र के नाम से कविताएं लिखी, उसके पश्चात तस्लीम लखनवी नाम से व्यंग्य पूर्ण स्केच एवं निबंध लिखें और आखिर में अमृतलाल नागर यह नाम धारण कर कहानियां लिखने लगे। आपकी भाषा सहज, सरल और विविध दृश्यों की सृष्टि करने की क्षमता रखती है। आवश्यकता के अनुसार आपने अपनी भाषा में मुहावरों, लोकोक्तियों, तत्सम, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है। वर्णनात्मक, भावात्मक, चित्रात्मक भाषा, विश्लेषणात्मक और पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हिंदी साहित्य में किया है। उन्होंने कहानी उपन्यास नाटक व्यंग्य बाल साहित्य आदि हिंदी साहित्य के विविध विधाओं पर लेखन कार्य किया उनके उपन्यासों में से खंजन नयन एक चर्चित उपन्यास है।

खंजन नयन :-

अमृतलाल नागर का खंजन नयन एक 'जीवनी - परख' उपन्यास है। इसमें सूरदास के जीवन संबंधी तथ्यों को कल्पना के आधार पर उजागर किया गया है। इस उपन्यास के लेखन के लिए अमृतलाल जी नागर ने अनेक स्थानों की यात्राएं की है, इतिहास पढ़ा है, साहित्य एवं सूरदास की रचनाओं का अध्ययन किया है और मठों, मंदिरों की जानकारी प्राप्त की है। इस उपन्यास के बहाने सूरदास को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार विमर्श करना होगा। जैसे-

1) जन्म और जन्मस्थान :-

सूरदास के जन्म और जन्म- स्थान को लेकर विद्वानों में अलग अलग मत प्रचलित हैं। अमृतलाल नागर ने इस उपन्यास में सूरदास का जन्म सूरदास के ही मुंह से कहलवाया है। नाव में बैठे पंडित सीताराम के द्वारा जन्म संवत पूछने पर सूरज कहता है कि मेरा जन्म 35 वैशाख शुक्ल संवत् 1535 (ई. 1478) है। साथ- ही- साथ अपना परिचय बताते हुए जन्म स्थान के बारे में वह कहता है कि, " मेरा जन्म गोवर्धन के निकट परासौली ग्राम में हुआ था किंतु चार वर्ष की आयु में गुरुग्राम के पास सीही चला गया।"1 अर्थात उपन्यासकार के अनुसार सूरदास का जन्म गोवर्धन

के पास परासौली गांव में हुआ था और वे सीही ग्राम के मूल निवासी थे। उपन्यास में सूरदास ने परासौली, सीही और सनकता गांव का भ्रमण भी किया है।

2) जाति एवं वंश :-

उपन्यास में सूरदास की जाति एवं वंश के बारे में विशेष रूप से बताया नहीं गया है। उनके पिता के नाम से पता चलता है कि वे सारस्वत ब्राह्मण थे। उपन्यास में सूरदास की जाति का संकेत हमें तभी मिलता है जब भोलेनाथ सूरदास को कहते हैं, " ब्राह्मण तो तुम भी हो। कालू हमें बतला गए थे।" 2 तब सूरदास का यह कहना कि " जब था तब । भिखारी हूं जिसकी कोई जाति नहीं होती। जहां मिला, खा लिया। जिसने जल पिलाया पी लिया फिर जाति कहां रही मेरी।" 3 इससे संकेत मिलता है कि वे जाति एवं वंश से ब्राह्मण थे।

3) अंधत्व :-

सूरदास के अंधत्व को लेकर भी मतभेद हैं। कुछ विद्वान सूरदास को जन्मांध मानते हैं, तो कुछ विद्वान उन्हें वृद्धावस्था में अंधे होने की बात करते हैं। जो भी हो अमृतलाल नागर तो सूरदास को जन्मान्ध हीं मानते हैं। इस उपन्यास के आरंभ में जब सूरदास को पंडित सीताराम गौड पूछते हैं कि तुम तो शकुन विद्या से परिचित हो, तब सूरदास का यह कहना कि " मैं जन्मांध निपट गंवार हूं महाराज। एक सन्यासी गुरुजी की कृपा से कुछ मीनमेख विचार लेता हूंँ।"4 अंधा होने के कारण ही घर में मां के सिवा उन्हें कोई भी प्रेम नहीं करता था। इसीलिए उन्होंने बचपन में ही घर छोड़ा था। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि सूरदास जन्मांध थे।

4) गृहत्याग :-

'खंजन नयन' उपन्यास से स्पष्ट होता है कि, सूरदास के पिता भागवत महाराज थे। घर में मां और तीन भाई थे। सबसे बड़े भाई संकर्षण दाऊ जीविका वस बाहर गए थे और घर में वासुदेव और गोपाल दोनों भाई सुर को अडंगे लगाते थें। उनको सूरदास के सुरीले कंठ से ईर्ष्या थी। घर में मां के अलावा सूरदास को कोई भी प्यार नहीं करता था। भाइयों ने ईर्ष्या वश सूरदास की वीना भी तोड़ दी थी। उनके कहने से गांव के लड़के भी " कौवा करे कांव-कांव सुरा करें भौं भौं " कहकर सूरज को चिढ़ाते थे। पंडित सीताराम द्वारा घर कब छोड़े ऐसा पूछे जाने पर सूरदास का यह कहना कि," भाइयों के कुचक्र और पिता के अविचार वश वह घर मेरे लिए जंगल की आग जैसा दाहक बन गया था। बड़े भाई ईर्ष्यावश यह चाहते थे कि मैं गाना और काव्य रचना छोड़ दूं। भोले पिता उनकी बातों में आ गए। मैंने घर त्याग दिया।"5 इससे सूरदास की पारिवारिक वेदना और उससे गृहत्याग करने की बात स्पष्ट होती है। सूरदास अपने पिता के लिए 'सूर्यनाथ' या 'सूरा', माता के लिए 'सूरज' और भक्तों के लिए 'सूर्य स्वामी' थे।

5) शिक्षा - दीक्षा :-

उपन्यास से स्पष्ट होता है कि घर में सूरदास को मां से ही प्यार मिलता था। पिता प्यार करते पर क्रोध बहुत करते थे। तीन वर्ष की आयु में ही उन्होंने सूरदास की हाथों में त्रितंत्री विना पकड़ा दी थी। सूर के करुण मधुर स्वर पर उन्हें अभिमान था। सात वर्ष की आयु में सूरदास ने अपने पिता की भागवत कथा वाचन के समय अपनी मीठी आवाज में अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया था तब लोगों ने उनकी बड़ी सराहना की थी। घर छोड़ने के बाद, जो सन्यासी गुरु मिले थे उन्होंने योगसाधना सुर को सिखाई थी। सूरदास ने इस बारे में कहा है कि," वे मुझे योग साधन शिकवाते थे। तुरकों के साथ बाहर से आई हुई रमल विद्या, फलित ज्योतिष भी उनकी कृपा से सीखा। परंतु वह मुझे गाने नहीं देते थे। मेरी काव्य- रचना भी उन्हें नहीं सुहाती थी।"6 कहते थे ध्यान करो, चित्त की वृत्तियों को वश में रखो। ध्यान धारण करना तो सूरदास ने स्वयं सीखा था।

स्वामी नाद ब्रह्मानंद जी के आदेशानुसार पिता भागवत महाराज ने साहित्य पढ़ाई के लिए राज कवि पंडित सोमेश्वर जी सारस्वत के पास भेज दिया था, जो सूर की काव्य प्रतिभा से प्रसन्न हुए थे। सूरदास अपने गीत माधुर्य से

सबको प्रभावित करते गए। स्वामी हरिदास जी हो ,दाऊ बाबा हो या गोस्वामी विट्ठलनाथ हो सभी से सूरदास ने शिक्षा प्राप्त की थी। सूरदास ने महाप्रभु वल्लभाचार्य से पुष्टीमार्ग की दीक्षा ली और उन्हें अपना गुरु भी मान लिया था। अपने गुरु महाप्रभु वल्लभाचार्य में वे प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण को देखते थे। सूरदास नहीं कठिन से कठिन समस्याओं में भी शिक्षा का त्याग नहीं किया। वे पास भी गए उनसे शिक्षा ग्रहण करते रहे और अपने ज्ञान साधना में वृद्धि करते रहे।

6) जीवन के संघर्ष में प्रसंग :-

सूरदास का जीवन वैसे बचपन से ही संघर्षमय रहा है। बचपन में जन्मपत्रिका देखकर किसी ज्योतिषी ने कह दिया था कि इस बालक का जन्म माता- पिता के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। वह भविष्यवाणी जैसे-जैसे फैलती गई वैसे-वैसे सूर के प्रति कटुता भी बढ़ती गई। अपनी सुरीली और मीठी आवाज के कारण वे अपने भाइयों की ईर्ष्या के पात्र बने। यहां तक कि ईर्ष्यावश भाइयों ने सूर्य की वीणा तक को तोड़ दिया था। इसी कारण उन्हें गृहत्याग करना पडा।

कालूराम की नाव में पंडित सीताराम और अपने साथियों के साथ सूरज जा रहा था। नाव पानीगांव से वृंदावन होते हुए आगे निकली कि एकाएक नाव जमुना नदी की धारा में खड़ी दो बड़ी नावों से घिर जाती है। कालू की नाव में चंदनमल व्यापारी का माल है समझ कर लुटेरों ने हिंसा और लूट आरंभ की। ऊपर से वर्षा और लुटेरों द्वारा नाव में हो रही हिंसा को जानकर अंधा सूरज पानी में कूद पड़ता है। लेकिन कालूराम डूबते अंधे सूरज को डूबने से बचा कर एक सुरक्षित स्थान पर लिटा देता है।

जीवन संघर्ष का दूसरा प्रसंग तब आता है जब मुकुंदे, श्रंगी, हरिहर चौबे और दाऊ दयाल के बने बनाए षड्यंत्र के तहत " एक रात जमुना किनारे के एक टूटे मंदिर में कंतो और सूर स्वामी सोते पाए गए। दोनों प्रायः विवस्त्र, सूर का एक हाथ कंतो के खुले वक्ष पर।" 7 यह षड्यंत्रकारियों का षड्यंत्र था। उन्होंने उसी रात इसका प्रचार-प्रसार किया जिससे भीड़ इकट्ठा हो गई और कंतो और सूर स्वामी की लाथ, थप्पड़ और घुसों से मरम्मत होने लगी। दोनों लहूलुहान तथा अधमरे हो जाते हैं ,तभी भोलेनाथ गुरु वहां आकर बीच-बचाव कर उन दोनों की जान बचाते हैं।

सूरदास के जीवन संघर्ष का तीसरा प्रसंग तब आता है जब सूर्यनाथ और कंतो दोनों पठानों के गांव से जा रहे थे। उस गांव के शकूर खान तेली का बैल मरने से और मौलवी कुदबुद्दी के फूसलाने से शकूर खाँ के बेटे नूरे खाँ ने सूर और कंतो दोनों अंधों को बैल की जगह कोल्हू को जोतने के लिए पकड़ लाया था। सूर्यनाथ के मजदूरी करने से मना करने पर नूरे खां जब सूर्यनाथ की पिटाई करने के लिए तैयार होता है, तो अंधी कंतो क्रोध से दहाड़ती हुई कहती है," देखूं तो सही, अपनी मयौ को कित्तो दूध पियो है, जो ले जाएगो मेरे सामी जी को।" 8 और अंधी कंतो अपनी लाठी अंधाधुंध घूमाने लगती है। वह रणचंडी सी दिखाई देती है। अंधा सूरज भी नुरे खाँ पर चपलता से टूट पड़ता है। इसी हाथापाई में नूरे खां गला दबाकर कंतो का खून कर देता है। एक ओर कंतो की मृत्यु का आघात, तो दूसरी ओर नूर खां के कोल्हू का बैल बना हुआ अंधा गुलाम सूरज बस्ती की औरतों और बच्चों के लिए तमाशा बन जाता है। नूर खां के शोषण से सूरदास को अयोध्या के उजागरमल सेठ ने चार बैलों का दाम देकर बचाया। एक बार काशी का बादशाह छिदम्मी पांडे के क्रोध का भी सूरज को शिकार होना पड़ा था। इस प्रकार लगता है सूरदास का संपूर्ण जीवन मानो संघर्ष से ही भरा हुआ है।

7) भक्ति और आस्था :-

सूरदास एक उच्च कोटि के भक्त थे। इन्होंने अपने काव्य में अधिकतर भक्ति के रूप को ही लिया है। जिसमें राधा- कृष्ण की भक्ति प्रमुख है। सूरदास ने भक्ति साधना में चित्त की एकाग्रता और वैराग्य को आवश्यक माना है। बचपन से ही राधा-कृष्ण के प्रति अपनी ध्यान साधना की प्रेरणा उन्हें अपनी माँ से मिली है। इस अनुभूति को व्यक्त करते हुए वे कहते हैं कि, " बचपन में मां ने एक बार श्री

राधा माधव की विग्रह (शरीर)का परस करवा दिया। वह छुअन अब बिजली बन गई है। मेरी अनामिका के स्पर्श से वह बिजली मेरी त्रिकुटी में समाती है। हमारे सन्यासी गुरुजी डांटे कि नहीं, सीधे त्रिकुटी में ध्यान लगाओ। आंख वालों को सधती होगी, मेरी तो परस बिजुलिया चमके है, उसी से ध्यान सधता है।"9 तभी से कृष्ण को सखा मानकर उनकी भक्ति में डूबते रहे। सूरदास के भाव लोक में राधा भी सर्वत्र विद्यमान है। कन- कन में, कुंज- कुंज में, पशु- पक्षी में, पेड़- पौधों में राधारानी उनकी आंखों में झांकती है। वह हरि- विष्णु श्याम राम में भेद नहीं मानते। वे अपनी दैन्य भावना को भी व्यक्त करते हुए कहते हैं -

" जा दिना तैं जनम पायो यहै मेरी रीत,
विषय विष हठि खात नाहीं डरत करत अनीति।"10

सूरदास की आस्था कृष्ण में ही थी। वे कृष्ण को ही अपना इष्ट देव मानकर उनकी सच्ची साधना करते थे। अपना कोई भी कार्य कृष्ण की भक्ति के बिना नहीं करते थे। जब नाव उलट जाती है, तो अपने सखा श्याम को याद करते हुए कहते हैं कि ' श्याम सखा तेरी जन्मभूमि में तेरी कालिंदी में डूब कर मरना ही जीवन है।' और जब बच जाते हैं तब उसे कृष्ण की लीला ही मानते हैं। राधा- कृष्ण का प्रथम परिचय का पद जब विट्ठलनाथ को सुनाते हैं कि," गोरी तुम कौन हो, कहां रहती हो, किस की बेटी हो, मैंने पहले तो तुम्हें ब्रज खोरि में कभी नहीं देखा।" तब राधा का कहना कि," मैं भला ब्रज में क्यों आती। हमारे घर में क्या खेलने की जगह नहीं है, यह सुना था कि ब्रज में कोई नंदजू का ढोटा रहता है, बड़ा ढीठ, बड़ा दधिमाखन चोर है, इसीलिए देखनी चली आई।"11 यह सुनकर विट्ठलनाथ प्रसन्न हो जाते हैं। अपने गुरु महाप्रभु वल्लभाचार्य में सूरदास हमेशा कृष्ण को देखते हैं। उनके कहने से ही कृष्ण लीला गान में मग्न रहे। वल्लभाचार्य की जल समाधि लेने के पश्चात् उनके बेटे विट्ठलनाथ की सेवा में लगे रहे और उन्हें कृष्ण मानने लगे। सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव से राधा- कृष्ण की लीलाओं का गान करना ही उनके जीवन का साध्य रहा है।

8) सांप्रदायिकता से दूरत्व :-

सूरदास की भेंट जब मीराबाई से होती है और मीराबाई कृष्ण और राधा को मोल लेने की बात करती है तब एक सहयात्री सूरदास को कहता है कि, मीराबाई बड़ी घमंडी है, कहती है कृष्ण के प्रति आदर भाव तो बहुत है लेकिन महाप्रभु को गुरु नहीं मानती। यह सुनकर सूरदास कृष्णदास की एक घटना बताते हुए कहते हैं कि, बहुत दिन पहले जब कृष्णदास अधिकारी मेवाड़ गए थे तब मीरा ने श्रीनाथ के घर से आया समझकर उनकी सेवा की और श्रीनाथजी से मेरी भेंट करवाने की बात कही, तो कृष्णदास ने उनकी भेंट को अस्वीकार किया था। यह सांप्रदायिकता की अंधी दृष्टि सूरदास के पास नहीं थी। श्री वल्लभाचार्य सूरदास के लिए कृष्ण से अलग नहीं थे। ऐसे युग पुरुषोत्तम कृष्ण के प्रति वे सांप्रदायिक दृष्टि से नहीं देखते थे।

9) महा मानवीय रूप :-

सूरदास एक सच्चे भक्त थे। वे किसी के भी साथ द्वेष की भावना नहीं रखते थे। अंधा होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी मधुर आवाज, भक्ति साधना और काव्य प्रतिभा से अपनी प्रसिद्धि चारों तरफ फैलई थी। कृष्ण का सानिध्य उन्हें प्राप्त था। गोस्वामी तुलसीदास हो, मीराबाई हो सांप्रदायिकता से हटकर वे सब के साथ स्नेह से पेश आते थे। सूरदास बड़े नर्मदिल थे। जब गोस्वामी विट्ठलनाथ जी सूरदास को कहते हैं कि, राधा- कृष्ण मिलन और केली प्रसंगों के पद मुझे सुनाने की कृपा करें तब सूरदास का यह कहना कि," ऐसे शब्द न कहे गोसाईं । आप आयु में मुझसे छोटे हैं, परंतु पद तो श्याम का है। आपकी इच्छा मेरे लिए आदेश है। भविष्य में कभी मुझसे इस प्रकार न कहें, यह प्रार्थना है।"12 यह सूरदास के महा मानवीय रूप को व्यक्त करता है। सूर ने जिस- जिस का साथ प्राप्त किया उसका उसी से प्रेम का नाता जुड़ गया। वे धर्म,जाति और आयु से परे जाकर सब के साथ स्नेह का नाता जोड़ देते थे

चाहे वह पंडित सीताराम हो, चाहे ब्रह्मानंद जी हो, चंदनमल सेठ हो, कालूराम हो, दाऊ बाबा हो, महाप्रभु वल्लभाचार्य हो या गोस्वामी विट्ठलनाथ। उपन्यास में अमृतलाल नागर जी ने बीच-बीच में सूरदास जी की श्याम मन से बातें करवाकर सूरदास के महामानव रूप को प्रस्तुत किया है।

10) सहृदयता का परिचय :-

उपन्यासकार ने उपन्यास में सूरदास के प्रति सहृदयता दिखाई है। रचनाकार की सहृदयता ही रचना को उच्च कोटि तक पहुंचा देती है।' खंजन नयन' उपन्यास में सहृदयता से पूर्ण कई प्रसंगों का वर्णन मिलता है। जब सूरदास घर छोड़ कर चले जाते हैं, तो उनकी मुलाकात एक पंडित से करवाना और पंडित से ज्योतिष तंत्र की विद्या देना, सूरदास का स्वयं ईश्वरदास से पीछा छुड़ाने का प्रयास लेकिन उन्हें छोड़ नहीं पाना, कंतो के प्रति आकर्षण न होते हुए भी कंतो की चिंता करना, उपन्यास के अंत में सूरदास बीमार हो जाते हैं, तो सभी का उसके पास बैठकर उनके मुंह में चरणामृत डालना तथा निधन के बाद सभी का शोकाकुल हो जाना आदि प्रसंगों में सहृदयता ही दिखाई देती है। अमृतलाल नागर जी ने उपन्यास में ऐसे प्रसंगों की सृष्टि की है की चाहे कोई व्यक्ति महान हो या साधारण एक दूसरों के प्रति सहानुभूति अवश्य दिखाता है। सूरदास जब राधा कृष्ण की लीलाओं को अपनी मधुर वाणी से सुनाते हैं, तो सुनने वाले सूरदास को वहां से जाने ही नहीं देते। अतः इन सभी प्रसंगों में उपन्यासकार ने सहृदयता का परिचय दिया है।

11) क्रमवार वर्णन :-

अमृतलाल नागर जी ने सूरदास की जीवनी को क्रमवार प्रसंगों के जरिए प्रस्तुत किया है। सूरदास का घर छोड़कर निकलना, उन्हें पंडित सीताराम, स्वामी ब्रह्मानंद जैसे गुरु मिलना, गुरु द्वारा पूछने पर सूरदास का स्वयं का नाम ,जन्मतिथि ,जन्मस्थान बताना, नाव से डूबते- डूबते बचना, मां की याद आते ही ब्रह्मानंद जी द्वारा सूर्यनाथ को घर ले आना, वहां साहित्य ज्ञान प्राप्ति के लिए पंडित सोमेश्वर जी से मिलना, कंतो का सूरदास से मिलना, कंतो के द्वारा सूर्यनाथ की सेवा करना, पठानों के गांव में दोनों की पिटाई होना, पठानों द्वारा सूर को बैल की तरह कोल्हू को जोतना और कंतो को मार डालना, महाप्रभु वल्लभाचार्य से मिलना, श्रीनाथ की सेवा में रहना और सूरदास का देहावसान। इन समस्त घटनाओं को उपन्यासकार ने सिलसिलेवार तथा क्रमवार पद्धति से प्रस्तुत किया है।

12) देहावसान :-

सूरदास ने अपनी कृष्ण के प्रति भक्ति -भावना, कृष्ण की लीलाओं का मधुर गान से सभी को आकर्षित किया था। अष्टछाप कवियों में सुर सर्वोपरि थे। अमृतलाल नागर जी ने 'खंजन नयन' उपन्यास में सूरदास का देहावसान परासौली में बताया है। उन्होंने उनकी मृत्यु की कोई तिथि नहीं बताई लेकिन यह सही है कि उनका देहावसान परसौली में ही हुआ था। सूरदास अपनी मृत्यु तक कृष्ण लीला गान करते रहे। मृत्यु के समय तो उनके हाथ में तानपूरी थी।" श्रीकृष्णः शरणं मम "13 का कहकर ही उन्होंने अपने प्राण त्यागे। उनकी मृत्यु पर मथुरा तक के रहवासी परासौली आए थे। गोसाईं विट्ठलनाथ द्वारा सूरदास को लेकर यह कहना कि," पुष्टिमार्ग का जहाज अब जाने वाला है।"14 यह सूरदास की कीर्ति और विद्वता को ही व्यक्त करता है। उपन्यास में सूरदास का 105 वा जन्मदिन मनाने का उल्लेख आया है। उसके आधार पर सूरदास का देहावसान संवत 1640 में हुआ ऐसा साबित होता है।

13) शीर्षक की सार्थकता :-

उपन्यास में शीर्षक की सार्थकता उपन्यास के अंत में स्पष्ट होती है। जब अपनी मृत्यु के समय सूरदास "खंजन नयन रुप रस माते "15 वाला गाना गाते हैं। सुर में बसी राधा के नेत्रों की वृत्ति खंजन पक्षी के नेत्रों के समान ही चंचल हो जाती है। सूर की आंखें भलेही अंधी हो पर अब वे राधेरानी के नयन हैं, अतिशय चारु और विमल। ' खंजन नयन ' से तात्पर्य चंचल नयन अर्थात राधारानी के नयन, जो कृष्ण दर्शन की प्यासे हैं, सूरदास की तरह।

14) शैली :-

'खंजन नयन ' उपन्यास में अमृतलाल नागर ने वर्णनात्मक, कथात्मक, व्यंग्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। कहीं कहीं पूर्वदीप्ति शैली का भी प्रयोग मिलता है। मुख्य रूप से उपन्यास में वर्णनात्मक शैली की अधिकता है। जैसे- " सूर स्वामी के भजन भाव से वहां के लोग इनके बड़े भक्त हो गए। खीर, पूरी, दूध, मलाई से मन चिकना हुआ। वहीं से फत्तेपुर की ओर जा रहे दो राथो में सामान रखकर तीनों जने बैठे। सांझ पड़े फत्तेपुर पहुंच गए। सवेरे एक ऊंट वाले से गाड़ी भाड़ा तय किया।... गाड़ी झकोले खाती चली। दूसरे दिन बनारसीदास जी से विदा ली और अयोध्या के लिए चल दिए।"16 चंदन मल के तथा श्याम सखा के संवादों में कहीं-कहीं व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है। घटनात्मक शैली के माध्यम से विभिन्न घटनाओं का वर्णन उपन्यासकार ने अपने उपन्यास 'खंजन नयन' में किया है।

15) भाषा :-

उपन्यासकार ने ' खंजन नयन' उपन्यास में भाषा का बड़ी कुशलता के साथ प्रयोग किया है। उपन्यास में सबसे अधिक ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है। पात्रों के अनुकूल संस्कृत निष्ठ हिंदी तथा विविध स्थानों के अनुरूप विभिन्न बोलियों का प्रयोग भी मिलता है। बावजूद इसी के भाषा सरल, स्पष्ट, सुबोध और श्रृंखलाबद्ध है। यहां गीतिकाव्य का भी प्रयोग मिलता है। उपन्यास में सूरदास के गीतों की तो भरमार दिखाई देती है। जैसे -

" हमै नंद नंदन मोल लिए।
जमके फंद काटि मुकराएअभय आजाद किए।।
भाल तिलक स्रवननी तुलसी दल मेटे अंक बिए।
मूंड्यो मुंड कंठ बनमाला मुदा चक्र दिए।।"17

दाऊ बाबा का गीत जिसे सूरदास गाते हैं -

" प्यारी जू जब- जब देखो तेरे मुख
तब- तब नयो- नयो लागत।"18

निष्कर्ष :-

अमृतलाल नागर जी ने ' खंजन नयन ' इस उपन्यास में सूरदास के जीवन को चित्रित किया है। यह एक जीवनी परक उपन्यास है, जिसमें उपन्यासकार ने सूरदास के जीवन के विविध प्रसंगों को चित्रित किया है। उपन्यास में सूरदास का जन्म, जन्म स्थान, गृह त्याग, अंधत्व, शिक्षा-दीक्षा, जीवन के कठिन प्रसंग, सूरदास का महा मानवीय रूप, सांप्रदायिकता से दूरत्व, भक्ति और आस्था, सहृदयता का परिचय, देहावसान आदि बिंदुओं को सिलसिलेवार पद्धति से प्रस्तुत किया गया है। अंधे होकर भी पहचानने की सूरदास की अद्भुत क्षमता। साथ- ही- साथ उपन्यासकार ने सूरदास के अंधे आंखों में राधा रानी की आंखों को आरोपित कर उसे 'खंजन नयन' यह शीर्षक दिया है, जिसका अर्थ है चंचल नयन। अर्थात जिस प्रकार राधा- रानी के नयन कृष्ण के दर्शन के प्यासे थे, उसी प्रकार सूरदास के अंधे नयन भी। यहां उपन्यासकार ने शीर्षक की सार्थकता को भी स्पष्ट किया है। इस उपन्यास की भाषा ब्रज भाषा है। संस्कृत निष्ठ शब्दों के साथ-साथ विविध स्थानीय बोलियों का भी बड़ी कुशलता के साथ उपन्यासकार ने अपने इस उपन्यास में प्रयोग किया है। मुहावरे, लोकोक्तियां तथा गीति शैली के विविध तत्वों ने उपन्यास को प्रभावपूर्ण बना दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

01. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 11
02. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 26
03. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 26
04. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 12
05. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 12

06. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 12
07. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 87
08. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 95
09. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 12
10. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 101
11. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 174
12. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 185
13. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 198
14. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 194
15. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 197
16. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 93
17. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 172
18. अमृतलाल नागर - खंजन नयन - संस्करण 2019, राजपाल एंड सन्ज - पृ. - 82

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com